International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-02-2023, Accepted: 14-03-2023, Published: 29-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 25-26

रघुवीर सहाय की कविताओं का वैशिष्टय

ओम नारायण
नेट उत्तीर्ण, परास्नातक–रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी–कविता के संवेदनशील कवि हैं। इनको कवि के रूप में 'दूसरा सप्तक' से विशेष ख्याति प्राप्त हुई। इनकी साहित्य सेवा भावना के कारण ही इनको साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित किया गया। रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी जगत के प्रसिद्ध कवि हैं। उनका काव्य समकालीन जगत का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। रघुवीर सहाय की प्रारंभिक दौर की कविताओं में भाषा के साथ एक खिलवाड़ या खिलंदड़ापन मिलता है, जो संवेदना के विकास के साथ बाद में काव्यगत विडंबना के लिए काम आता है।
रघुवीर सहाय को 'नई कविता' के समर्थ कवियों में गिना जाता है। वे रोजमर्रा के प्रसंगों को अपनी विशिष्ट काव्य शैली में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त हैं। उनकी पत्रकारिता उनकी कविता को जानदार एवं प्रासंगिक बनाती है इससे उनकी कविताओं में एक खास किस्म की तथ्यात्मकता आ गई है और यह मात्र 'तथ्य' ना रहकर 'सत्य' बन जाता है। उन्होंने अपनी कविताओं में रोजमर्रा के प्रसंगों को उठाकर विशिष्ट काव्य–शैली का परिचय दिया है।

मूल शब्दः रघुवीर सहाय, कविता, विशेषता, नाटकीयता, गुण, भाषा, आधुनिकता, लय, काव्य–शैली

रघुवीर सहाय हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि हैं। इन्होंने समकालीन समाज पर अपने विचार प्रकट कर अपना लेखन कार्य किया है। इन्होंने समकालीन अमानवीय दोषपूर्ण राजनीति पर व्यंग्योक्ति तथा नए ढंग की कविताओं का आविष्कार किया है। इनकी प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित हैं–
'सीढ़ियों पर धूप में', 'आत्महत्या के विरुद्ध', 'हंसो हंसो जल्दी हंसो', 'लोग भूल गए हैं', 'आत्महत्या के विरुद्ध' इनका प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। 'सीढ़ियों पर धूप में' कविता–कहानी–निबंध का अनूठा संकलन है। 'आत्महत्या के विरुद्ध' इनका प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। 'सीढ़ियों पर धूप में' कविता कहानी निबंध का अनूठा संकलन है।
रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील 'नागर' चेहरा हैं। सड़क, चौराहा, दफ्तर, अखबार, संसद, बस, रेल और अखबार की वेलौस भाषा में उन्होंने कविता लिखी। घर मोहल्ले के चरित्र रामदास, गीता, सीता, हरिया, हरचरना पर कविता लिखी और इन्हें हमारी चेतना का स्थाई नागरिक बनाया। हत्या –लूटपाट और आगजनी राजनीतिक भ्रष्टाचार और छल इनकी कविता में उतरकर खोजी पत्रकारिता की सनसनीखेज रपटे नहीं रह जाते, बल्कि आत्मन्वेषण का माध्य बन जाते हैं।
रघुवीर सहाय जी ने समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। इन के काव्य में सामाजिक यथार्थ के प्रति विशिष्ट सजगता दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने सामाजिक अव्यवस्था शोषण विडंबना आदि का यथार्थ चित्रण किया है। रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में अदम्य जिजीविषा का वर्णन किया है। इनकी अनेक कविताओं में इस विशेषता का अनूठा चित्रण हुआ है। 'सीढ़ियों पर धूप में ' काव्य संग्रह की प्रायः सब कविताओं में अदम्य जीवन जीने की इच्छा की सफल अभिव्यक्ति हुई है।
कवि ने समकालीन समाज के मध्यमवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रांकन प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने काव्य में मध्यमवर्गीय जीवन में परिव्याप्त तनावों और विडंबनाओं का वर्णन किया है। वह कवि और शेष दुनिया के बीच का अनुभूत तनाव है,जो कवि को निरंतर आंदोलित करता रहता है। इसके साथ–साथ कवि ने कुछ व्यक्ति और समूह के मध्य तनाव का चित्रांकन भी किया है।
रघुवीर सहाय की कविताओं में भाषा का क्रीडाभाव खूब मिलता है। इस क्रीडा भाव से कविता में नाटकीयता का गुण आ जाता है। शुरू के दिनों की उनकी एक मशहूर कविता 'दुनिया' की भाषा में यही क्रीडा भाव देखा जा सकता है।

लोग कुछ नहीं करते जो करना चाहिए, तो लोग करते क्या हैं?
यही तो सवाल है कि लोग करते क्या हैं, अगर कुछ करते हैं
लोग सिर्फ लोग हैं तमाम लोग, मार तमाम लोग
लोग ही लोग हैं चारों तरफ लोग, लोग, लोग
दुनिया एक बजबजाई हुई चीज हो गई है।

इसी तरह के भाषिक खिलंदड़ेपन की एक और कविता भी मध्यमवर्गीय लोगों के बारे में है,'सभी लुजलुजे हैं' जिसमें वाचक ऐसे चुने हुए शब्द इस्तेमाल करता है जो कविता में शायद ही कभी प्रयुक्त हुए हों 'खोखियाते हैं,किकियाते हैं, घुन्नाते हैं /चुल्लू में उल्लू हो जाते हैं/ मिमियाते हैं, कुडकुडाते हैं.....। यही सीधा भाव आत्महत्या के विरुद्ध की कविताओं तक पहुंचते–पहुंचते एक ऐसी आयरनी,में तब्दील हो गया जिससे उनकी कविता महेश आलोक के शब्दों में,"एक मजबूत शोषणतंत्र या व्यवस्था के खिलाफ, अमानवीयता के खिलाफ, हत्या–षड्यंत्र और मनुष्यता के पतन के खिलाफ, राजनीतिक अवसरवादिता के खिलाफ, आम–आदमी के गुस्से को पूरे संघर्षशील तेवर और उसकी कमजोरियों, लाचारियों, कमियों के साथ खड़ा करने और पूरे मानवीय जीवन के साथ मुठभेड़ की कविता हो जाती है।" उनके इस विकास को उन्हीं की एक कविता से परखा जा सकता है।

"यही मेरे लोग हैं
यही मेरा देश है
इसी में रहता हूं
इन्हीं से कहता हूं
अपने आप और बेकार।"

कवि ने काव्य भाषा के विकास में बहुत सारे नाटकीय पात्रों की रचना की। शुरू के दौर में मजाकिया लहजे में कुछ पात्रों का सृजन रघुवीर सहाय ने किया था, जैसे–'शांति दो' कविता में 'चाहे वह क्रांति की बहन ही क्यों ना हो' मगर बाद में 'रामदास' जैसा प्रतिनिधिक पात्र उनकी कविता में आया।

डॉ. नामवर सिंह रघुवीर सहाय की नाटकीयता के संदर्भ में लिखते हैं कि "आत्महत्या के विरूद्ध कविता के आंतरिक एकालाप के अंदर से एक दुनिया उठती हुई नज़र पड़ती है जो समाधिलेख की दुनिया से ज्यादा ठोस, ज्यादा खूंखार, ज्यादा भयावह है और संभवतः ज्यादा राजनीतिक है। इस दुनिया की सजीवता कविता की आंतरिक नाटकीयता का आधार है।"

रघुवीर सहाय की काव्य यात्रा के शुरू के दिनों की एक कविता, 'मेरा एक जीवन है' में वाचक जहां अपने निजी जीवन के बारे में कहता है कि 'उसमें मेरे प्रिय में हैं, मेरे हितैषी हैं' वहीं वह एक और जीवन की बात करता हैः

"पर मेरा एक और जीवन है
जिसमें मैं अकेला हूं
जिस नगर के गलियारों, फुटपाथों,
मैदानों में घुमा हूं
पर मैं इस हाहातूती नगरी में अकेला हूं।"
(सीढ़ियों पर धूप में)

एक स्तर पर ऐसा लगता है कि यह कविता आधुनिकतावादियों की काव्य भाषा का अनुकरण करती हुई मनुष्य के आत्मनिर्वासन की काव्य वस्तु को दोहरा रही है।

रघुवीर सहाय पैनी दृष्टि वाले कवि थे। इसीलिए इनकी लेखनी में पैनी व्यंग्यात्मकता दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने समकालीन समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, राजनैतिक अस्थिरता, जीवन मूल्यों की गिरावट कुरीतियों आदि के प्रति गहन व्यंग्य प्रस्तुत किए हैं। इनकी अनेक कविताओं में समकालीन सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विडंबनाओं के प्रति अपने व्यंग्य कसे हैं। इन्होंने 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में दुख–दर्द,यातना को लेकर व्यक्ति पर करारे व्यंग्य किए हैं। उसी दौर में उन्होंने 'झेल लेंगे' कविता में अपने समय के चिंतन के साथ एक गंभीर मुठभेड़ को दर्शाया है। ऐसा लगता है पूरी कविता 'अज्ञेय' के 'क्षण' और 'मौन' के फलसफे को चुनौती दे रही होः–

"बैठे हो मौन, कहीं ठहरे हो अनुभव में?
बैठे हो गहरे की बैठे हो भरे हुए?"

और इस कविता का अंतिम मशहूर छंद इसी बहस का समापन करता है जो उस समय छिड़ी हुई थीः

"कहिए कि धीर धरे पीर यदि पराई हो,
तो उसकी एक भली तस्वीर है।"

रघुवीर सहाय ने अपनी कविताओं में स्वप्न शैली का भी प्रयोग किया है। स्वप्न शैली में एक तरह की खास संवेदना मूर्त होती है और उसमें एक निश्चित भाव अंतर्निहित होता है। रघुवीर सहाय ने स्वप्न शैली में जो भी कविताएँ लिखी हैं, वे सब वास्तविकता की ओर संकेत करती हैं। उनकी इच्छायें और विचार जब अतृप्त होते हैं, तो वही स्वप्न के रूप में उन्हें दिखाई देते हैं। जिसे हम उनकी स्वप्न शैली मानते हैं, वो वास्तव में समाज का यथार्थ ही है, जिसे रघुवीर सहाय बेचैनी की अवस्था में स्वप्न में देखकर बेचैन हो उठते हैं और कविता के रूप में हमें उन तमाम बातों से अवगत कराते हैं, 'गिरीश की मृत्यु' कविता में वे लिखते हैं कि–

"एक महान राष्ट्रीय दायित्व ने मुझे जगा दिया
तब बैठा मैं/डकारता अपनी पतली टाँगे निहारता
अपने को झाड़ता कविता लिखने के लिए।"

दरअसल, यह शैली मनोविज्ञान पर आधारित होती है। यह व्यक्ति के अवचेतन मन में घटित होने वाली घटनाओं पर आधारित होती है। इसमें बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। इस शैली में एक क्रमबद्ध तरीके से सभी घटनाएँ नहीं होती हैं। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. बच्चन सिंह लिखते हैं "इसका संबंध अवचेतन मन में घटित होने वाली घटनाओं की विशिष्ट और बेतरतीब बिम्बावियों से है। इसमें बिम्बों, प्रतीकों, मिथकों आदि को पद्धति कर्नुमोदित पद्धति पर उपस्थित किया जाता है।"

रघुवीर सहाय की कविताओं में मामूली आदमी विषय–वस्तु बना है। सामाजिक विसंगतियों, विद्रुपताओं और विडंबनाओं ने ही रघुवीर सहाय को कवि बनाया है। वे खतरनाक ढंग से गहराई में जाकर सोचने–समझने वाले व्यक्ति और रचनाकार हैं। यही उनके काव्य का संपूर्ण चरित्र है। उनकी कविता 'अस्तित्ववादी दर्शन' के भीतर मौजूद 'हत्या' के विरोध में खड़ी हो जाती है।' आत्महत्या के विरुद्ध','हंसो हंसो जल्दी हंसो' जैसे काव्य संग्रह की कविताओं पर परिवेश की हत्या का दबाव है। यह दबाव सामाजिक, राजनैतिक, अमानवीय और बचपन के भीतर से उत्पन्न हुआ है।

रघुवीर सहाय ने अपनी कविताओं से लय को कभी गायब नहीं होने दिया। आखिरी दिनों की कविताओं में भी यह ले बनी रही। 'कुछ पते कुछ चिट्ठियां' की 'सच क्या है' कविता की दो पंक्तियां भी उस लाए को झंकृत कर रही हैं–

"इस झूठे करोड़ा में मने को धिक्कार है,
वह दुख ही सच्चा है जो हमने झेला है।"

रघुवीर सहाय को साहित्य अकादमी पुरस्कार,1984 में, लोग भूल गए हैं, के लिए मिला था। हम कह सकते हैं कि रघुवीर सहाय सरलता और सहजता के पक्षधर थे। वो भाषा को लेकर अलग–अलग प्रयोग करते रहे और इन प्रयोगों को लेकर वह कविता को साधारण बोलचाल की भाषा के नजदीक रखना चाहते थे और भाषा को अत्यधिक प्रभावी, संप्रेषण की क्षमता से जोड़ना चाहते थे। उनके भाव और विचार पाठकों के लिए सहज बोधगम्य हो वो ऐसी ही भाषा चाहते थे। रघुवीर सहाय का काव्य वैशिष्ट्य बहुत अनोखा और व्यंग्यपरक है। जिसमें समाज की सच्चाई को उभारा गया है। इनकी कविताओं की मुख्य विशेषता ही यही है कि यह जीवंत और प्रासंगिक बनी हुई हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. रघुवीर सहाय का कवि–कर्मः– सुरेश शर्मा
2. रघुवीर सहायः जीवन एवं संवेदनाः– डॉक्टर जय शंकर तिवारी
3. रघुवीर सहाय की कविता और समकालीन कविता–आलेख
4. कविता के नए प्रतिमान–नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. प्रतिनिधि कविताएँ सं. सुरेश शर्मा
6. आलोचना के बीज शब्द–बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली